अकाल और उसके बाद

(कविता - नागार्जुन)

1. चूल्हा क्यों रोया ?

(अनाज नहीं, आदमी नहीं, वर्षा नहीं)

2. ***कई दिनों तक लगी भीत पर***
छिपकलियों की गश्त
कई दिनों तक चूहों की भी
हालत रही शिकस्त। **- इसका मतलब क्या है?**

घर में गरीबी के कारण दीया नहीं जलाता, कीड़े नहीं आते। इसलिए भूख के मारे छिपकलियाँ गश्त करते हैं। चूहों की हालत भी अन्न के अभाव में शिकस्त रही।

3.

आस्वादन टिप्पणी - 'अकाल और उसके बाद'

- नागार्जुन

श्री नागार्जुन हिंदी के प्रगतिशील कवि है। नागार्जुन की कविता पढ़नी है तो नागार्जुन को पढ़ना है। उनका असली नाम वैद्यनाथ मिश्र था। वे मैथिली में 'यात्री' नाम से कविता करते थे। 'अकाल और उसके बाद' नामक इस कविता में कवि ने राजनीतिक विचारधारा पर तीखा व्यंग्य किया है।

पहली चार पंक्तियों में मानवीय करुणा का ज्वलंत चित्रण है। 'चुल्हा रोया'-चुल्हा नहीं रोया बल्कि घरवाला रोया। चक्की में दाना नहीं, घर में दाना नहीं। छिपकलियाँ भूख से तड़पती हैं। चुहों की स्थिति भी दयनीय है। यहाँ कवि ने साधारण किसान की भूख और बेचैनी को व्यंग्यात्मक शैली में वर्णित किया है।

अंतिम चार पंक्तियों में स्थिति एकदम बदल गयी है। कई दिनों के बाद जब घर में दाने आये तब चूल्हा जलाया गया और चिमनी से धुआँ उठने लगा। जीवजंतुओं की आँखें चमक उठीं और कौए पंख खुजलाते हुए आने लगे।

आपात काल का वर्णन अनेक कवियों ने किया है। लेकिन नागार्जुन का वर्णन अलग है। रोटी, कपड़ा और मकान एक समय का नारा था। सच्ची राजनीति में अकाल नहीं होगा। यहाँ कवि का साम्यवादी दृष्टिकोण प्रकट है।

4."चमक उठीं घर भर की आँखें कई दिनों के बाद।"

इसका मतलब क्या है?

उ:अकाल के बाद घर में दाने आये तो सब खुश हुए। अर्थात् खाना मिलने पर केवल मनुष्य ही नहीं, घर के सभी जीव-जंतु खुश हुए। उन्हें नया जीवन मिला था।

5. आशय समझकर सही मिलान करें।

अकाल के समय	आँगन से धुआँ उठा। चूहों की हालत उदास रही। चूल्हा रोया। घरवालों की आँखें चमक उठीं।
अकाल के बाद	कानी कुत्तिया चूल्हे के पास सोई। कौए ने पाँखें खुजलाई। घर में दाने आए। चक्की उदास रही।

उ:

अकाल के समय	चूहों की हालत उदास रही। चूल्हा रोया। कानी कुत्तिया चूल्हे के पास सोई। चक्की उदास रही।
अकाल के बाद	आँगन से धुआँ उठा। घरवालों की आँखें चमक उठीं। कौए ने पाँखें खुजलाई। घर में दाने आए।

ठाकुर का कुआँ

(कहानी - प्रेमचंद)

1. ठाकुर का कुआँ कहानी की समस्या क्या है? (जाति प्रथा, पानी की समस्या, गरीबी)

उः जाति-प्रथा

2. गंगी और जोखू के आपसी वार्तालाप में किन - किन के नाम आते हैं ?

उः ठाकुर, साहू आदि के

3. जोखू और गंगी ठाकुर या साहू के कुएँ से पानी क्यों नहीं ले सकते?

जाति-पाँति के कारण, वे दोनों निम्न जाती के लोग हैं।

4. गंगी और जोखू के बीच का वार्तालाप कल्पना करके लिखें।

जोखू : गला सूखा जा रहा है। पीने के लिए थोड़ा पानी दे।

गंगी : यहाँ है पानी, पी लें।

जोखू : क्या तू सड़ा पानी पिला रही है? कैसी बदबू है।

गंगी : पानी में बदबू कैसी? कल तो नहीं थी। कोई जानवर कुएँ में गिरकर मरा होगा, मैं दूसरा पानी लाए देती हूँ।

जोखू : पानी कहाँ से लाएगी?

गंगी : ठाकुर या साहू के कुएँ से।

जोखू : बैठ चुपके से, हम अछूत उन कुएँ से पानी लें तो हाथ-पाँव तुड़वा देंगे।

5. जोखू पानी पी नहीं सका। इसका क्या कारण था?

(बदबू, खुशबू, गर्मी)

6. गंगी के अनुसार पानी में बदबू आने का क्या कारण था?

गंगी को क्यों दूर से पानी लाना पड़ता था?

7. गाँव में किन-किन के कुएँ थे?

उः साहू और ठाकुर के

8. जोखू की हालत कैसी थी?

उः वह कई दिनों से बीमार था। अब, प्यास से उसका गला सूख रहा था।

9. गंगी, जोखू को खराब पानी देने को तैयार नहीं थी। क्यों?

उः गंगी जानती थी कि खराब पानी पीने से बीमारी बढ़ जाएगी।

10. 'पानी को उबाल देने से उसकी खराबी जाती रहती है'- गंगी यह नहीं जानती थी। क्यों?

उः उसकी अशिक्षा के कारण

11. शाम को घड़ा लेकर गंगी कहाँ चली गई?

उः ठाकुर के कुएँ पर

12. ठाकुर के कुएँ का पानी किसकेलिए रोका था?

उः निम्न जाति के लोगों के लिए

13. गंगी ने घर वापस आकर कौन सा दृश्य देखा?

उः उसने देखा कि जोखू वही मैला-गंदा पानी पी रहा था।

14. सही मिलान करें

ठाकुर का दरवाज़ा	बार-बार जाना मुश्किल था ।
खाना खाने चले	शेर का मुँह जैसे भयानक ।
कुआँ दूर था	हुक्म हुआ कि ताज़ा पानी भर लाओ

15. ठाकुर का कुआँ कहानी के आधार पर **गंगी** की **चार** विशेषताएँ चुनकर लिखें।

- पति का आदर करनेवाली
- साहसी औरत
- जाति प्रथा को स्वीकार करनेवाली
- विद्रोही दिलवाली
- जाति प्रथा से घृणा करनेवाली
- अमीर नारी

उ:

- पति का आदर करनेवाली
- साहसी औरत
- विद्रोही दिलवाली
- जाति प्रथा से घृणा करनेवाली

16. ठाकुर का कुआँ कहानी के आधार पर **ठाकुर** की **चार** विशेषताएँ चुनकर लिखें।

- अमीर आदमी
- सच्चा आदमी
- निर्दय आदमी
- उच्च जातिवाला
- गरीबों पर दया करनेवाला
- चोरी, जाल- फरेब करनेवाला

उ:

- अमीर आदमी
- निर्दय आदमी
- उच्च जातिवाला
- चोरी, जाल- फरेब करनेवाला

17. **ठाकुर का कुआँ** कहानी के आधार पर **चार** सही प्रस्ताव चुनकर लिखें।

- गंगी नीच जाति के लोगों की विवशता पर दुखी है।
- उच्च जातिवालों के दुर्व्यवहार पर मन ही मन हँसी उड़ाती है।
- गंगी जल्दी ठाकुर के कुएँ से पानी लेकर आती है।
- जाति प्रथा को स्वीकार करने के लिए कभी तैयार नहीं थी।
- गंगी जाति प्रथा के विरुद्ध आवाज़ उठाना चाहती है।
- ठाकुर का दरवाज़ा सबके लिए खुला था।

उ:

- गंगी नीच जाति के लोगों की विवशता पर दुखी है।
- उच्च जातिवालों के दुर्व्यवहार पर मन ही मन हँसी उड़ाती है।
- जाति प्रथा को स्वीकार करने के लिए कभी तैयार नहीं थी।
- गंगी जाति प्रथा के विरुद्ध आवाज़ उठाना चाहती है।

18. "तू सड़ा पानी पिलाए देती है।" इसमें **विशेषण** शब्द कौन- सा है?

उ: सड़ा

वाक्यांश	**विशेषण**
सख्त बदबू	सख्त
गंदा पानी	गंदा
ताज़ा पानी	ताज़ा
धुँधली रोशनी	धुँधली

19.**वाक्य पिरमिड की पूर्ति करें।**

(क) (कुएँ पर, कुप्पी की)

रोशनी आ रही थी।

धुँधली रोशनी आ रही थी।

.....

.....

उ: रोशनी आ रही थी।

धुँधली रोशनी आ रही थी।

धुँधली रोशनी कुएँ पर आ रही थी।/ कुप्पी की धुँधली रोशनी आ रही थी।

कुप्पी की धुँधली कुएँ पर रोशनी आ रही थी।

(ख) (एक वृक्ष के, झुककर चलती हुई)

गंगी जा खड़ी हुई।

गंगी अंधेरे साये में जा खड़ी हुई।

.....

.....

उ: गंगी जा खड़ी हुई।

गंगी अंधेरे साये में जा खड़ी हुई।

गंगी झुककर चलती हुई अंधेरे साये में जा खड़ी हुई / गंगी एक वृक्ष के अंधेरे साये में जा खड़ी हुई

गंगी झुककर चलती हुई एक वृक्ष के अंधेरे साये में जा खड़ी हुई।

(ग) (आराम करने को, छिन भर)

तरसकर रह जाता है।

जी तरसकर रह जाता है।

.....

.....

उ: तरसकर रह जाता है।

जी तरसकर रह जाता है।

आराम करने को जी तरसकर रह जाता है।

छिन भर आराम करने को जी तरसकर रह जाता है।

20. जोखू ने लोटा मुँह से लगाया तो पानी में सख्त बदबू आई।

गंगी से बोला- यह कैसा पानी है? मारे बास के पिया नहीं जाता। गला सूखा जा रहा है और तू सड़ा पानी पिलाए देती है!

कहानी के प्रस्तुत अंश के आधार पर **पटकथा** का एक दृश्य तैयार करें।

दृश्य - एक

स्थान - गंगी और जोखू का घर

समय- सुबह 7 बजे

पात्र - गंगी ,आयु - लगभग 35 साल, साड़ी पहनी है।

जोखू ,आयु - लगभग 40 साल, बनीयन और धोती पहना है।

(झोंपड़ी में जोखू बीमार है। वह पानी पीना चाहता है। लोटा मुँह से लगाने पर बदबू आती है। परेशान होकर गंगी को बुलाता है।)

जोखू :(ज़ोर से) गंगी. . . ओ . . . गंगी. . . .

गंगी : हाँ,आई। क्या बात है?

जोखू : यह कैसा पानी है? मारे बास के पिया नहीं जाता।

गंगी : क्या?

जोखू : (प्यास से विवश होकर) गला सूखा जा रहा है और तू सड़ा पानी

पिलाए देती है!

(गंगी लोटा नाक से लगाती है।)

21. " जाति- प्रथा अभिशाप है ।"

इस विषय पर **पोस्टर** तैयार करें।

बसंत मेरे गाँव का

(लेख - मुकेश नौटियाल)

1. मकर संक्रांति के बाद सूरज कहाँ से चौखंभा पर्वत की तरफ़ खिसकना शुरु कर देता है?

पंचाचूली के शिखरों से

2. मकर संक्रांति के बाद सूरज पंचाचूली के शिखरों से किस की तरफ़ खिसकना शुरु करता है?

चौखंभा पर्वत की

3. सूरज कब पंचाचूली के शिखरों से चौखंभा पर्वत की तरफ खिसकना शुरू करता है?

मकर संक्रांति के बाद

4. दादी के अनुसार जेठ तक सूरज हर सुबह कितनी दूरी छलाँग मारता है?

बालिश्त भर

5. पंचाचूली से चौखंभा तक पहुँचने में सूरज को कितने महीने का समय लग जाता है?

पूरे चार महीने का

6. पंचाचूली पर्वत की कितनी चोटियाँ हैं?

पाँच

7. चौखंभा पर्वत की कितनी चोटियाँ हैं?

चार

8. पँचाचूली और चौखंभा के बीच में कौन सा पर्वत नज़र आता है?

नंदा पर्वत

9. जब सूरज पंचाचूली से खिसककर नंदा पर्वत तक पहुँचता है तो पहाड़ों में कौन-सा फूल खिलने लगता है?

फ्यूँली

10. पहाड़ी ढ़लानों पर कटे खेतों का आकार कैसा है?

सीढ़ीनुमा

11. पहाड़ी खेतों में किन-किन की खेती की जाती है?

गेहूँ और सरसों की

12. नंदा पर्वत कहाँ स्थित है?

पँचाचूली की पाँच चोटियों और चौखंभा के चार शिखरों के ऐन बीच में नंदा पर्वत स्थित है।

13. बसंत जब बौराने लगता है तब पहाड़ी ढ़लानों पर क्या-क्या रूपांतर होते हैं?

पहाड़ों में फ्मूँली के पीले फूल खिलने लगते हैं।

पहाड़ों के खेतों में गेहूँ की हरियाली के बीच सरसों की पीलाई पसर जाती है।

14. बसंत कौन सा त्योहार लेकर आता है?

फूलदेई का

15. फूलदेई के त्योहार के अवसर पर बच्चे अपने चुने हुए फूल रात भर किस तरह की टोकरियों में रखते हैं?

रिंगाल से बनी खास तरह की टोकरियों में

16. 'पौ फटना' से क्या मतलब है?

प्रभात होना

17. उत्तराखंड़ के पहाड़ी अंचल में बच्चों का सबसे बड़ा त्योहार कौन सा है?

फूलदेई का त्योहार

18. फूलदेई का त्योहार कहाँ मनाया जाता है ?

उत्तराखंड के पहाड़ी अंचल में

19. फूलदेई के त्योहार में बड़ों की क्या भूमिका है?

केवल सलाह देना

20. फूलदेई के त्योहार के अवसर पर जिनके घर फूलों से सजाए जाते हैं वे बच्चों को क्या-क्या देते हैं?

चावल, गुड़, दाल आदि

21. फूलदेई के त्योहार में दक्षिणा में मिली सामग्रियों से क्या किया जाता है?

दक्षिणा में मिली सामग्री त्योहार के पूरे इक्कीस दिन तक इकट्ठी की जाती है। अंतिम दिन इकट्ठी की गई सामग्री से सामूहिक भोज बनाया जाता है।

22. फूलदेई के त्योहार में परंपरागत रूप से चैती गीत गानेवाले क्या कहलाते हैं?

औजी

23. फूलदेई के त्योहार में गाए जानेवाले चैतीगीत में किन- किन के किस्से होते हैं?

पाँडवों की हिमालय यात्रा के किस्से और पहाड़ी वीरों की शौर्य - गाथाएँ।

24. बंसत की धूप जब तपाने लगती है तब हिमालय-शिखरों पर कौन सा फूल चटकने लगता है?

बुराँस का फूल

25. ठंड के मौसम में बर्फीले इलाकों से पशुचारक निचले इलाकों में क्यों उतरते हैं?

ठंड के मौसम में पहाड़ बर्फ से ढ़क जाने से जीना मुश्किल हो जाता है।

तब पशुचारक अपने जानवारों के साथ निचले इलाकों में उतरते हैं।

26. पशुचारक जानवरों के साथ-साथ, गाँववालों को क्या-क्या बेचते हैं?

कीड़ाजड़ी, करण और चुरु जैसी दुर्लभ हिमालयी जड़ी ।

27. गाँववालों केलिए खरीदते वक्त पशुचारकों को पूरी कीमत चुकाना ज़रूरी नहीं होता। क्यों?

पशुचारकों का गाँवों से सदियों का रिश्ता है। आपसी विश्वास के दम पर वर्षों से ये लेन-लेन चल रहा है। बर्फीले मौसम में निचले इलाकों में जाते समय पुरानी वसूली की जाती है।

28. नकद-उधार के आंकड़े कहीं दर्ज नहीं होते, इससे गाँववालों का कौन सा मनोभाव प्रकट होता है?

गाँववालों के भोलापन, आपसी संबंध और सच्चाई का मनोभाव प्रकट होता है।

29. सूरज जब चौखंभा पर्वत के ठीक पीछे से उदय होने लगता है, तब कौन सा महीना शुरु हो जाता है?

जेठ

30. बद्रीनाथ की यात्रा कब शुरु होती है?

जेठ के महीने में

31. 'जब तक हिमालय रहेगा ऋतुओं के बदलने का उल्लास बना रहेगा' यह किसने कहा?

दादी ने

32. फूलदेई के त्योहार पर टिप्पणी लिखें।

सूचनाएँ

- उत्तराखंड का त्योहार
- बच्चों का बड़ा त्योहार

- ♦ फूलों से सजावट
- ♦ घरों से दक्षिणा
- ♦ दक्षिणा से सामाजिक भेज

33. सही मिलान करें:

गाँवों से पशुचारकों का सदियों का रिश्ता है।	अंतिम दिन इन से सामूहिक भोज बनाया जाता है।
पंचाचूली की पाँच चोटियों की ओर से जब सूरज प्रकट होता है।	उनके हाथ में एकतारा होता है और उसके संगीत पर वे भजन गाते हैं।
दक्षिणा में मिली सामग्री पूरे इक्कीस दिन तक इकट्ठा की जाती है।	इसलिए उसी वक्त पूरी कीमत चुकाना ज़रूरी नहीं होता।
सुदूर दक्षिण से आनेवाले महात्मा कई बार हमारे गाँव तक आ जाते हैं	तब मेरे गाँव में हाड़कंपा देनेवाली ठंड पड़ती है।

34. प्रकृति और मानव का अटूट संबंध है - इस आशय पर आधारित पोस्टर तैयार करें।

प्रकृति हमारी माँ,
प्रकृति की रक्षा हमारी सुरक्षा।

पेड़ लगाएँ,

हरीतिमा बढ़ाएँ।

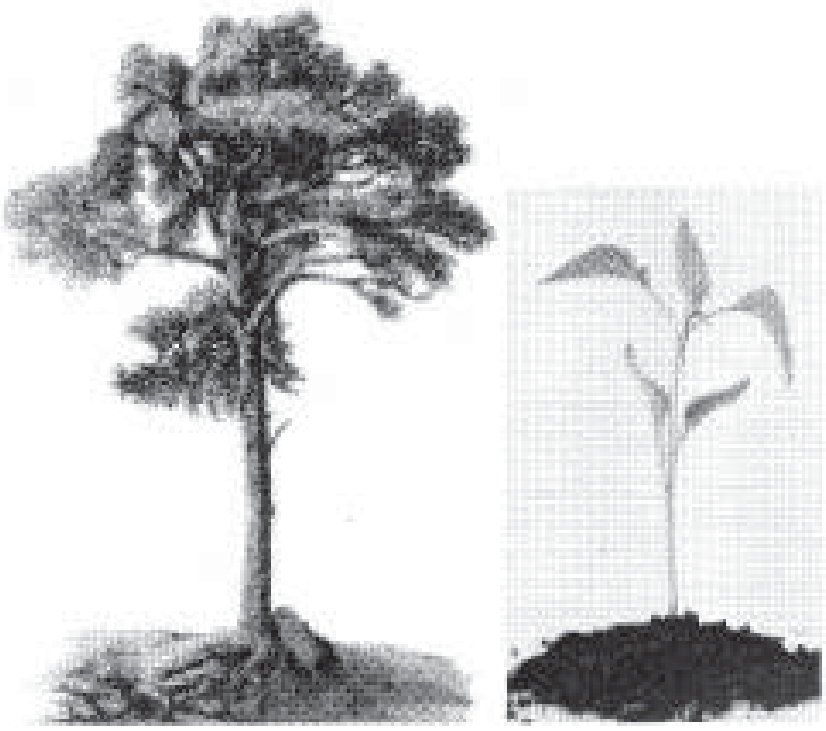

35. सही मिलान करें:

(क)

टोकरियों को रात भर पानी से भरी गागरों के ऊपर रखा जाता है।	सारे काम बच्चे करते हैं।
जिनके घरों में फूल सजाए जाते हैं	ताकि वे सुबह तक मुरझा न जाएँ।
बड़ों की भूमिका केवल सलाह देने तक सीमित है	वे बच्चों को चावल, गुड़, दाल आदि देते हैं।

(ख)

बसंत की धूप तपाने लगती है	सड़क में हलचल बढ़ जाती है।
गाँवों से उनका सदियों का रिश्ता है	ऊँचे हिमालय शिखरों पर बुराँस चटकने लगते हैं।
पशुचारकों के जत्थे गुज़र जाते हैं	उसी वक्त पुरानी कीमत चुकाना ज़रूरी नहीं होता।

(ग)

फूलदेई का त्योहार आता है।	सामूहिक भोज बनाया जाता है।
बच्चे फूलों से घर सजाते हैं।	बच्चे फूल चुनते हैं।
दक्षिणा की सामग्री इक्कीस दिन इकट्ठा करते हैं।	घरवाले दक्षिणा देते हैं।

36.**वाक्य पिरमिड की पूर्ति करें।**

(क) (दक्षिणा में मिली, पूरे इक्कीस दिन तक)

इकट्ठा की जाती है।

सामग्री इकट्ठा की जाती है।

.....

.....

(ख) (शानदार, पहाड़ों पर)

लालिमा बिछा देते हैं।

बुराँस के फूल लालिमा बिछा देते हैं।

.....

.....

(ग) (कई बार, दक्षिण से आनेवाले)

गाँव तक आ जाते हैं।

महात्मा गाँव तक आ जाते हैं।

.....

.....

37. "**बसंत मेरे गाँव का" लेख** के आधार पर **चार** सही प्रस्ताव चुनकर लिखें।

- फूलदेई के त्योहार में बच्चों की अहम भूमिका है।
- सारे कामों में बड़े लोग बच्चों की सहायता करते हैं।
- आपसी विश्वास के बल पर पशुचारकों और गाँववालों के बीच के लेन- देन होते हैं।
- ऋतुओं के बदलने में हिमालय का महत्वपूर्ण स्थान है।
- बद्रीनाथ और केदारनाथ के मुख्य पुजारी उत्तर भारत से नियुक्त है।
- बुराँस के फूल पहाड़ों पर शानदार लालिमा बिछा देते हैं।

38. **सही मिलान करें।**

चैती गीत गाते हैं।	बड़े
सामूहिक भोज बनाते हैं।	मुख्य पुजारी
केवल सलाह देते हैं।	औजी
दक्षिण भारत से नियुक्त हैं।	बच्चे

उ:

चैती गीत गाते हैं।	औजी
सामूहिक भोज बनाते हैं।	बच्चे
केवल सलाह देते हैं।	बड़े
दक्षिण भारत से नियुक्त हैं।	मुख्य पुजारी

दिशाहीन दिशा

(यात्रा वृत्त - मोहन राकेश)

1.दिशाहीन दिशा किस विधा की रचना है?

उ: यात्रावृत्त

2.बहुत बार सोचने पर भी मोहन राकेश यात्रा नहीं कर पाया। क्यों?

उ: समय और साधन की कमी के कारण।

3. लेखक को सबसे अधिक आत्मीयता किस को लेकर महसूस होती थी?

उ: कन्याकुमारी के तट को लेकर।

4. लेखक के मित्र का नाम क्या है?

उ: अविनाश

5.अविनाश क्या करता था?

उ: भोपाल से निकलनेवाले एक हिंदी दैनिक का संपादन करता था।

6. भोपाल स्टेशन में कौन लेखक से मिलने आया?

उ: मित्र अविनाश

7. ट्रेन में लेखक को कौन-सी सीट मिल गई थी?

उ: ऊपर की सीट।

8. दिल्ली के मित्र के अनुसार गोआ की विशेषताएँ क्या -क्या है?

उ: गोआ में खुला समुद्र तट है। एक आदिम स्पर्श लिए प्राकृतिक रमणीयता है। वहाँ जीवन बहुत सस्ता है।

9.मल्लाह अब्दुल जब्बार का गायन कैसा था?

उ: उसका गला अच्छा था और सुनाने का अंदाज़ा भी शायराना था।

10. मल्लाह की वेशभूषा कैसी थी?

उ: उस सर्दी में भी वह सिर्फ एक तहमद लगाए थे और गले में बनीयान तक नहीं था।

11. **दिशाहीन दिशा यात्रावृत्त** के आधार पर **चार** सही प्रस्ताव चुनकर लिखें।

- अब्दुल जब्बार भोपाल ताल में नाव खेता है।
- मोहन राकेश का गला अच्छा था।
- अविनाश एक दैनिक का संपादक है।
- मोहन राकेश अपना सूटकेस लिए भोपाल स्टेशन पर उतर गया।
- अब्दुल जब्बार के गायन में मोहन राकेश और अविनाश लीन हो गए।
- गोआ में जीवन बहुत सस्ता है।

11.**सही मिलान करें।**

घर से चलते समय	सीधे कन्याकुमारी चला गया।
पहले सोचा था कि	यात्रा की कोई रूपरेखा नहीं थी।
पश्चिमी समुद्र तट पर	हम घूमने निकले।
रात को ग्यारह के बाद	गोआ से सुंदर दूसरी जगह नहीं।

उ:

घर से चलते समय	यात्रा की कोई रूपरेखा नहीं थी।
पहले सोचा था कि	सीधे कन्याकुमारी चला जाऊँ।
पश्चिमी समुद्र तट पर	गोआ से सुंदर दूसरी जगह नहीं।
रात को ग्यारह के बाद	हम घूमने निकले।

12. संकेतों के आधार पर मल्लाह अब्दुल जब्बार के चरित्र पर टिप्पणी लिखें।

- गरीब
- परिश्रमी
- सादा जीवन बितानेवाला
- विनयशील

मेहनती मल्लाह

बूढ़ा मल्लाह अब्दुल जब्बार गरीब और परिश्रमी था। दिन - रात भोपाल ताल में नाव चलाते वह आजीविका कमाता था। उसका गला काफी अच्छा था और गज़ल सुनाने का अंदाज़ा भी शायराना था। सर्दी में भी वह सिर्फ एक तहमद लगाए था। बनीयान तक नहीं थी। उसकी दाढ़ी और छाती के भी बाल सफ़ेद हो चुके थे। सादा जीवन बितानेवाला वह हमेशा खुश और विनयशील था। जब्बार मोहन राकेश और अविनाश के कहने पर गज़ल गाया था। वह बूढ़ा था, फिर भी ताकतावाला था। वह एक सहृदय व्यक्ति है। आम जनता का प्रतीक है।

13. भोपाल ताल की सैर के अनुभवों का जिक्र करते हुए मित्र के नाम मोहन राकेश का **पत्र** लिखें।

स्थान

तारीख

प्रिय मित्र,

कैसे हैं? परिवारवाले खुश हैं न? मैं यहाँ सकुशल हूँ। अभी एक यात्रा से लौट आया। उन मज़ेदार अनुभवों को आपसे बाँटना चाहता हूँ।

वह एक अच्छा दिन था। मित्र अविनाश भी साथ था। हम दोनों ने रात में भोपाल ताल में नाव लेकर सैर की । बूढ़े मल्लाह अब्दुल जब्बार की गज़लें अब भी मेरे कानों में हैं। उसका गला काफी अच्छा था और सुनाने का अंदाज़ा भी शायराना था । बहुत मज़ा आया। ऐसा अनुभव जीवन में पहली बार आया था। वहाँ से लौटने का मन नहीं था।

समय मिलें तो आप भी वहाँ चलिए। आशा करता हूँ घर के सब लोग सानंद है।

सबको मेरा प्यार।

आपका मित्र

(हस्ताक्षर)

मोहन राकेश

सेवा में

नाम पता।

बच्चे काम पर जा रहे हैं

(कविता - राजेश जोशी)

1. "बच्चे काम पर जा रहे हैं " कविता के कवि कौन है?

उ: राजेश जोशी

2."बच्चे काम पर जा रहे हैं " कविता में कौन- सी समस्या चित्रित हुई है?

उ: बालश्रम की समस्या

3. 'हमारे समय की सब से भयानक पंक्ति है यह' भयानक पंक्ति क्या है?

उ: सुबह-सुबह काम पर जानेवाले बच्चों की पंक्ति ।

4.'इसे सवाल की तरह लिखा जाना है'। क्यों?

उ: किसी सामाजिक समस्या को प्रस्तुत करने में समाज की ओर सवाल उठाना ही सशक्त मार्ग है। यहाँ कवि ज्वलंत सामाजिक समस्या बालश्रम के प्रति समाज का ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं।

5. **सही मिलान करें ।**

(क)

इसे लिखा जाना चाहिए	बच्चे काम पर जा रहे हैं ।
कोहरे से ढँकी सड़क पर	भयानक है।
इसे विवरण की तरह लिखा जाना	सवाल की तरह

—

उः

इसे लिखा जाना चाहिए	सवाल की तरह।
कोहरे से ढँकी सड़क पर	बच्चे काम पर जा रहे हैं ।
इसे विवरण की तरह लिखा जाना	भयानक है।

(ख)

सारी गेंदें	भूकंप में ढँह गई हैं ।
रंग-बिरंगी किताबों को	अंतरिक्ष में गिर गई हैं ।
मदरसों की इमारतें	दीमकों ने खा लिया है।

उः

सारी गेंदें	अंतरिक्ष में गिर गई हैं ।
रंग-बिरंगी किताबों को	दीमकों ने खा लिया है।
मदरसों की इमारतें	भूकंप में ढँह गई हैं ।

6. बच्चे काम पर क्यों जाते होंगे ?

उ: गरीबी, समाज की उपेक्षा, अभिभावकों का लोभ, अनाथावस्था आदि बच्चे काम पर जाने के कारण होंगे ।

7.सूचनाओं के आधार पर "बच्चे काम पर जा रहे हैं " कविता पर टिप्पणी तैयार करें ।

- बालश्रम कठोर अपराध
- बच्चों की शिक्षा-समाज का दायित्व
- आज का बच्चा-कल का नागरिक

श्री राजेश जोशी आधुनिक हिंदी के प्रमुख कवि हैं । उनकी एक प्रसिद्ध कविता है ' बच्चे काम पर जा रहे हैं ' । इस कविता में कवि ने बालश्रम की समस्या की ओर संकेत किया है । कविता द्वारा कवि समाज को याद दिलाते हैं कि कई छोटे-छोटे बच्चे सुबह - सुबह काम पर जा रहे हैं। गरीबी आदि कई समस्याओं के कारण बच्चे अपने बचपन से वंचित होते हैं। कवि की राय में सबेरे काम पर जानेवाले असहाय बच्चों की पंक्ति आज की दुनिया की सबसे भयानक पंक्ति है। कवि इस भीषण समस्या को समाज के सामने सवाल की तरह प्रस्तुत करना चाहते हैं। मतलब, इस सवाल का उत्तर ढूँढ़ने का दायित्व समाज का है, या बालश्रम की पूरी ज़िम्मेदारी समाज पर ही निर्भर है। आज के बच्चे कल के नागरिक हैं। शिक्षित बच्चे समाज के विकास की नींव है।

गुठली तो पराई है

(कहानी - कनक शशि)

1."गुठली तो पराई है" कहानी के रचयिता कौन है?

उ: कनक शशि

2."गुठली तो पराई है" कहानी में चर्चित विषय क्या है?

उ: लड़की-लड़का भेदभाव

3."अपना घर" इसका मतलब क्या है?

उ: ससुराल

4."जो कल होना है उसे लेकर आज क्यूँ परेशान होना।" यह किसने कहा?

उ: माँ ने

5.शादी के बाद दीदी में क्या बदलाव आए?

उ: शादी के बाद दीदी साडी पहनी सिमटी बैठी हुई थी। पहले जैसे बातूनी और मस्तीखोर नहीं थी। भैया का आदर करने लगी।

6. क्या शादी के बाद भाई में कोई बदलाव आया था? क्यों?

उ:नही। उस ज़माने में घर में लड़कों का ही महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता था।

7.शादी के कार्ड छपकरआए तो गुठली का मुँह उतर गया। क्यों?

उ: उसमें गुठली का नाम नहीं था।

8. सही मिलान करें।

(क)

ऐसे ही करेगी क्या अपने घर जाकर ?	माँ
ये दिन फिर लौट के नहीं आनेवाले हैं, इन्हें जी भर के जी लो।	भैया
तेरा नाम तेरे अपने कार्ड में छपेगा यहाँ नहीं...	बुआ
गुठलिया, अपने नानू को खाना नहीं दिया?	ताऊजी

उ:

ऐसे ही करेगी क्या अपने घर जाकर ?	बुआ
ये दिन फिर लौट के नहीं आनेवाले हैं, इन्हें जी भर के जी लो।	माँ
तेरा नाम तेरे अपने कार्ड में छपेगा यहाँ नहीं...	ताऊजी
गुठलिया, अपने नानू को खाना नहीं दिया?	भैया

(ख)

गुठली.. अपने ताऊजी को चाय दे आ।	गुठली
बेटा, आज पौधों को पानी नहीं पिलाया क्या?	माँ
आप कुलदीपक हो, यह घर, यह बगीचा आपका ही है।	ताईजी
बचपना है दीदी समझ जाएगी।	पिताजी

उ:

गुठली.. अपने ताऊजी को चाय दे आ।	ताईजी
बेटा, आज पौधों को पानी नहीं पिलाया क्या?	पिताजी
आप कुलदीपक हो, यह घर, यह बगीचा आपका ही है।	गुठली
बचपना है दीदी समझ जाएगी।	माँ

8. 24 जनवरी राष्ट्रीय बालिका दिवस है।

मान लें, इस दिन आपके स्कूल के हिंदी मंच के नेतृत्व में "सामाजिक समानता" विषय पर संगोष्ठी होनेवाली है। इसके लिए एक **पोस्टर** तैयार करें।

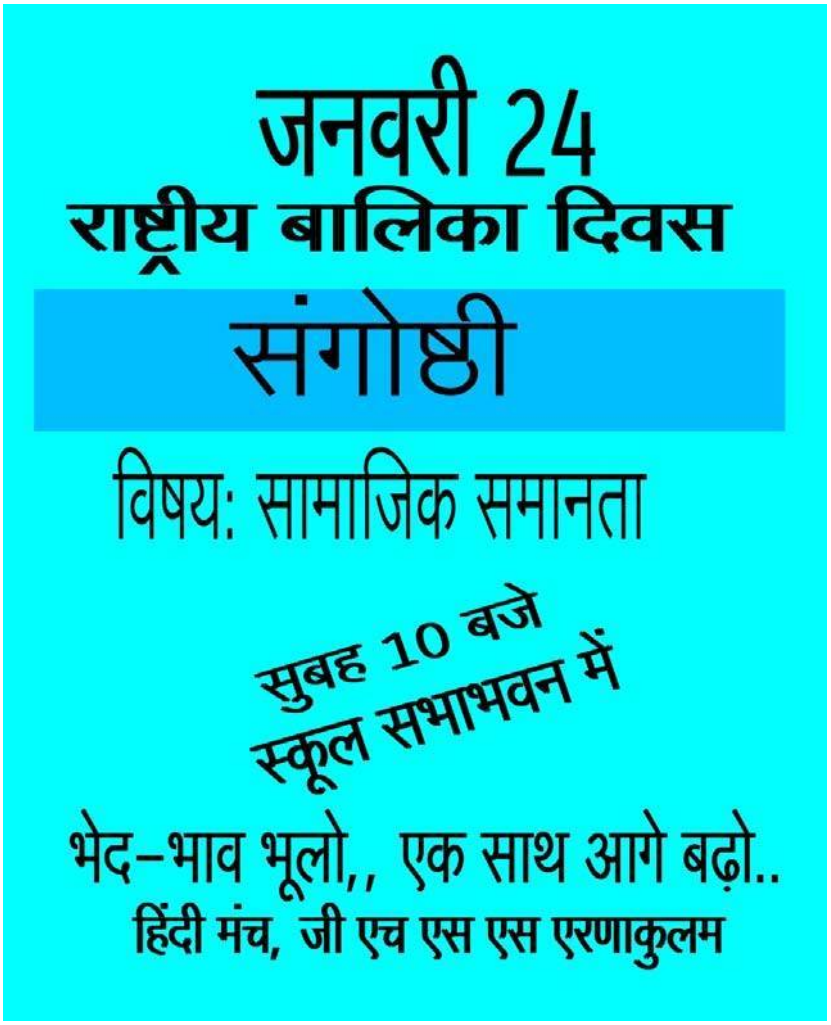

9. वाक्य पिरमिड़ की पूर्ति करें।

(क) (कार्ड पर, अपने घर की)

नाम नहीं छपते।

छोरियों के नाम नहीं छपते।

.....

.....

(ख) (और भी, माँ की बातों पर)

हताश हो गई।

गुठली हताश हो गई।

.....

.....

(ग) (मनहूसियत, शादी के)

फैला रही है।

घर में फैला रही है।

.....

.....

10. "गुठली तो पराई है" कहानी के आधार पर **चार** सही प्रस्ताव चुनकर लिखें।

- गुठली नसीहतें पसंद करती थी।
- भेदभाव के विरुद्ध आवाज़ उठाना चाहती थी।
- माँ के प्यार को मानती थी।
- भैया शादी के बाद भी क्रिकेट खेलता था।
- शादी के बाद दीदी मस्तीखोर थी।
- शादी के कार्ड में अपना नाम न देखकर गुठली दुःखी थी।

11. अपने घर में भी असमानता देखकर गुठली परेशान होती है। अपने मन की बातें सहेली को बताना चाहती है।

सहेली के नाम गुठली का **पत्र** तैयार करें।

स्थान

तारीख

प्रिय तुलसी,

नमस्ते, तू कैसी है? घर में सब ठीक है न ? मैं यहाँ बहुत दुःखी हूँ। कई दिनों से तुमसे एक बात बताना चाहती हूँ।

बुआ कहती है कि मैं पराए घर की अमानत हूँ। ससुराल ही मेरा असली घर है। यह घर मेरा नहीं है। माँ भी बुआ का साथ देती है। क्या यह सही है? दीदी की शादी के कार्ड में मेरा नाम नहीं है। लेकिन इसमें भइया के छोटे- से बेटे का भी नाम है।

दीदी शादी के बाद बदल चुकी है। लेकिन भइया शादी के बाद भी पहले जैसे है। सब कह रहे हैं कि भाई कुलदीपक है। सब उसीका है। बहुत हो गया। अब मैं चुप रह न सकती। समाज में क्या लड़की का कोई अधिकार नहीं है? इसके विरुद्ध आवाज़ उठानी है।

माता- पिता से मेरा नमस्कार कहना। तेरे जवाब की प्रतीक्षा में. . .

तेरी सहेली

(हस्ताक्षर)

गुठली

सेवा में

नाम पता

9.

गुठली की दैनिकी/डायरी

तारीख

आज भी रोज़ की तरह मेरा अपमान किया। शादी के कार्ड पर केवल मेरा नाम नहीं छपवाया। भइये के छोटे से बेटे का भी नाम है जो अभी बोल भी नहीं सकता तो मेरा....। क्या लड़की के रूप में पैदा होना बुरी बात है? क्या लड़कों केलिए हमारे संविधान में अलग नियम है? लड़की होने के नाते बुआजी का बार-बार याद कराना...। बुआजी के अनुसार लड़कियों का कोई हक नहीं। लड़का और लड़की के समान अधिकार है। अवसर है। मैं किसी और की अमानत...। नहीं..मैं यह नहीं स्वीकार करूँगी। इसके खिलाफ़ मैं जरूर आवाज़ उठाऊँगी.. कल से मैं सभी को सबक सिखाऊँगी।

10.

गुठली की दैनिकी / डायरी

तारीख

आज का दिन मैं कैसे भूलूँगी? शादी के कार्ड में केवल मेरा नाम नहीं। भइये के छोटे से बेटे का भी नाम है। मैं एक लड़की हूँ। इसलिए मेरा नाम नहीं। लड़की का कोई अधिकार नहीं है ? लड़की का कोई अवसर नहीं है? लड़की पराये घर की अमानत है ? बुआ यों कहती है। मैं यह नहीं मानूँगी। इसके खिलाफ़ आवाज़ उठाऊँगी।

प्रकृति हमारी माँ,
प्रकृति की रक्षा हमारी सुरक्षा।

पेड़ लगाएँ,
हरीतिमा बढ़ाएँ।

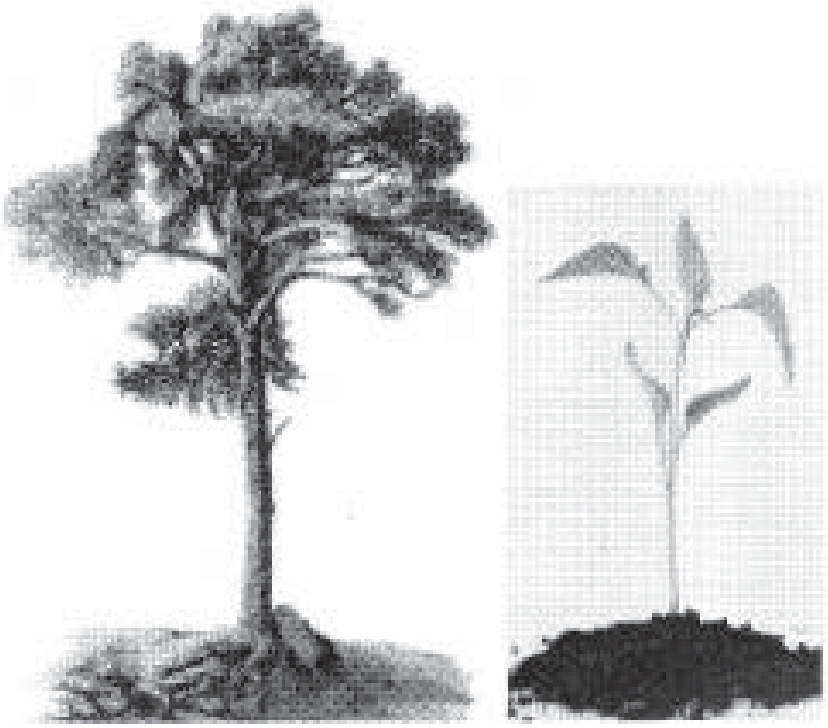

बालश्रम
मानवता के विरुद्ध अपराध
बालश्रम रोको
बचपन बचाओ.....

बालश्रम
कठोर
अपराध है।

बच्चों को कक्षाओं में बिठाओ,
गिलासों में नहीं...
सब पढ़ें, सब बढ़ें।

जून 5

विश्व पर्यावरण दिवस

"पर्यावरण
जीवन का आधार"

जी.एच.एस. कोल्लम
विश्व पर्यावरण दिवस समारोह
स्कूल सभागृह में
पौधों का वितरण (छात्रों को)
उद्घाटनः माननीय वन मंत्री
अद्यक्षःपि.टि.ए.अध्यक्ष
सुबह 10- बजे
-सबका स्वागत-

ध्यान दें,
परीक्षा की दृष्टि से पोस्टर में चित्रों की भूमिका नहीं है,
भाषाई दक्षता पर ही बल दिया जाता है।

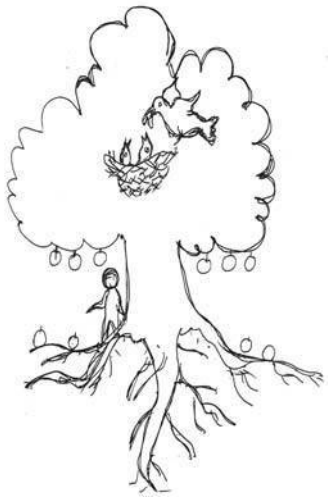

प्रकृति हमारी माँ,
पशुपक्षी हमारे सहजीवी...
प्रकृति से अलग होकर
मानव का अस्तित्व नहीं...
प्रकृति की रक्षा...
हमारी सुरक्षा...

पेड़ लगाएँ
धर्ती को बचाएँ..
वैश्विक तापन,
पेड़ ही जवाब है...

धरती में होगी हरियाली
जीवन में होगी खुश हाली।।
प्रदूषण धरती का खतरा,
पेड़ - पौधे लगाकर दूर करें खतरा।

पेड़ लगाएँ,
जलवायू सुरक्षित रखें,
जीवन बचाएँ...

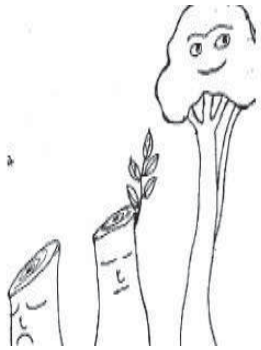

प्रकृति जीवन का आधार
पेड़ के बिना जीवन निराधार
पेड़-पौधे मत करो नष्ट
साँस लेने में होगा कष्ट...

पानी है जीवन की आस,पानी
को बचाने का करो प्रयास ।
पानी की रक्षा है देश की सुरक्षा।
जल है असली सोना।
इसे नहीं है कभी खोना।

जल है तो कल है....

प्रकृति की करे रक्षा,
पर्यावरण का रखे ध्यान,
तभी बनेगा देश महान।।

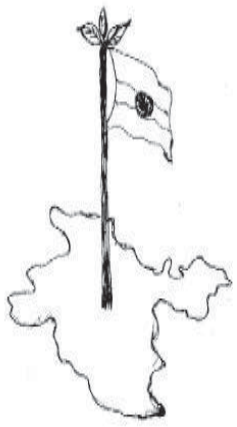

लड़की पराई नहीं, अपनी ही है..

लड़की-लड़का भेदभाव
सामाजिक विपत्ति!

लड़की बचाओ,
देश का महत्व बढ़ाओ ।

सड़क सुरक्षा सप्ताह
जनवरी 1 से 7 तक

"दुर्घटना आँसु लाती है, सुरक्षा खुशी देती है"

नशे की हालत में गाड़ी न चलाएँ,
अधिक तेज़ गति से वाहन न चलाएँ,
सभी सड़क के नियमों का पालन करें।

"सड़क की सुरक्षा प्राणों की सुरक्षा"

युद्ध, मानवता का विनाश...

हथियार छोंड़ें,
शांति अपनाएँ,
मानव बनें..

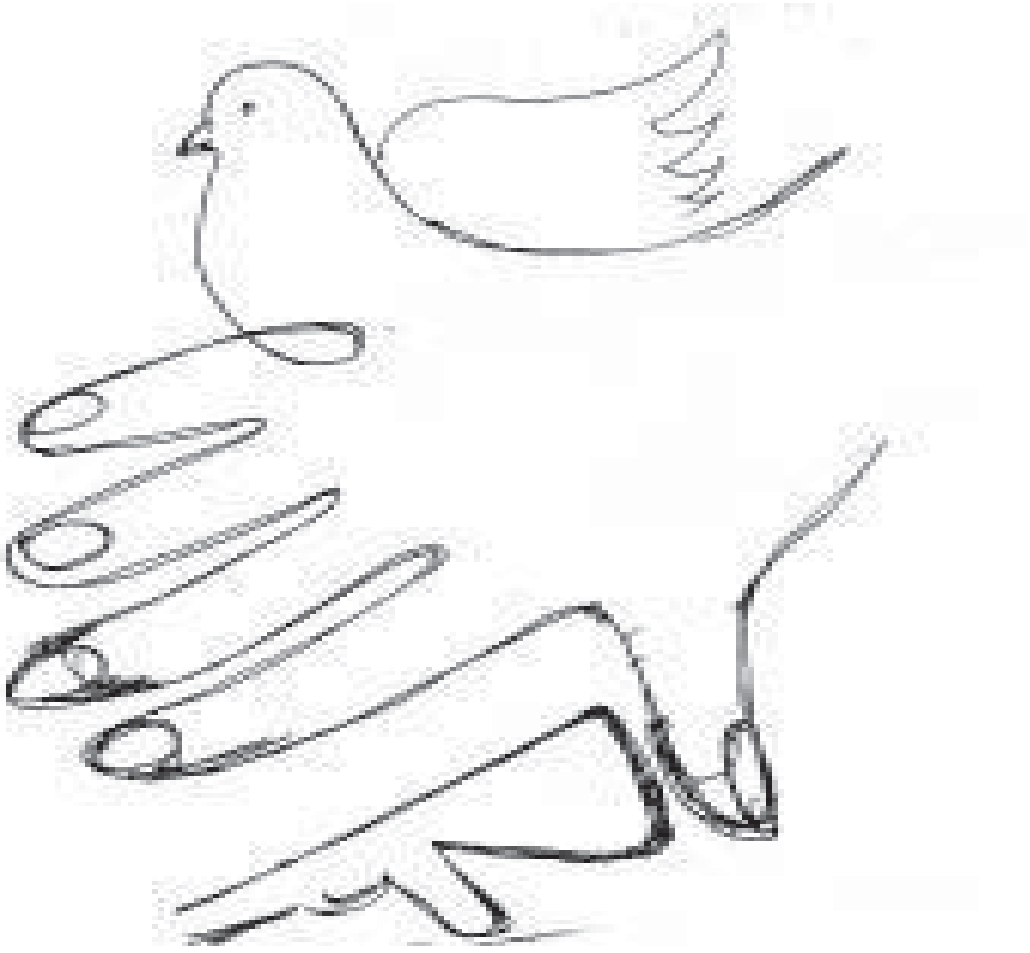

पोस्टर - नमूने

1. जून - 12 बालश्रम विरुद्ध दिवस है। इस अवसर पर आपके स्कूल में "बच्चों के अधिकार" विषय पर संगोष्ठी होनेवाली है। इसके लिए एक पोस्टर तैयार करें।

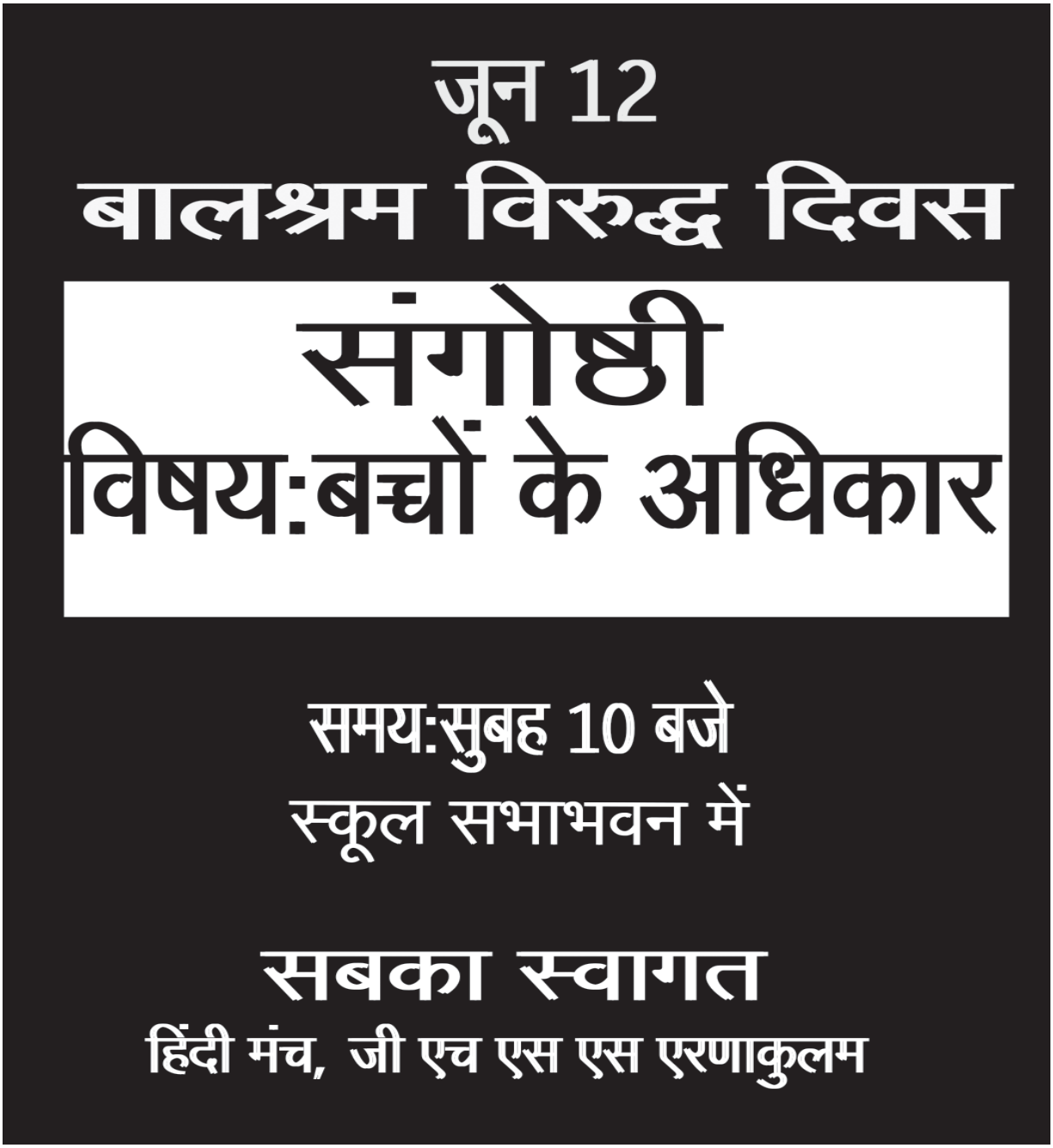

2. प्रेमचंद जयंती जुलाई 31 को मनाया जाता है। इस अवसर पर कण्णूर सरकारी हाईस्कूल में प्रेमचंद की कहानी ठाकुर का कुआँ का नाटकीकरण होनेवाला है। इसके लिए एक पोस्टर तैयार करें।

3. मार्च 8 अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस है। महिलाओं का आदर करना स्वस्थ समाज का निशान है। उनकी सुरक्षा हरेक का दायित्व है। यह संदेश देते हुए एक पोस्टर तैयार करें।

पटकथा - नमूने

1. **मैनेजर ने चार्ली को माँ के कुछ दोस्तों के सामने अभिनय करते देखा था और वह उसे स्टेज पर भेजने की ज़िद करने लगा। माँ डर गई। पाँच साल का बच्चा इस उग्र भीड़ को झेल पाएगा!**

'सबसे बड़ा शो मैन' जीवनी के प्रस्तुत अंश के आधार पर पटकथा का एक दृश्य तैयार करें।

उत्तरः

दृश्य - 1

स्थान : प्रेसिडेंसी थिएटर, लंदन

समय : शामको चार बजे

पात्र : हन्ना, 35 साल की औरत, चुड़ीदार पहानी है।
मैनेजर, 50 साल का आदमी, कुर्ता और पतलून पहना है।

(थिएटर में हन्ना की शो चल रहा है। आवाज़ फटने से शो रुक जाता है। लोग चिल्लाते हैं।)

संवाद

मैनेजर : क्या हुआ हन्ना ?

हन्ना : (परेशान होकर) आवाज़ आती नहीं।

मैनेजर : तो तुम गा नहीं पाएगी ?

हन्ना : मेरा गला खराब हो गया।

मैनेजर : ज़रा कोशिश करो।

हन्ना : (दुःख से) नहीं, मैं गा नहीं सकती।

मैनेजर : तो हम क्या करें। देखो, लोग चिल्ला रहे हैं।

हन्ना : पता नहीं जी।

मैनेजर : तुम्हारा बेटा कहाँ है ? वह अच्छी तरह गाता है न ?

हन्ना : वह तो यहाँ है, परदे के पीछे।

मैनेजर : उसे बुलाओ।

हन्ना : नहीं, वह तो सिर्फ पाँच साल का है। इस उग्र भीड़ को झेल नहीं पाएगा।

मैनेजर : हमें और कोई चारा नहीं।

हन्ना : ठीक है, शो चलना है। हम कोशिश करेंगे।

(हन्ना चार्ली को बुलाती है।)

2. **ठंड के मौसम में बर्फ़ीले इलाकों से निचले इलाकों में उतरे पशुचारक वापस घरों को लौटने लगते हैं। रास्ते में आनेवाले गाँवों से उनका लेन-देन भी होता रहता है। इन गाँवों से इनका सदियों का रिश्ता है, इसीलिए उसी वक्त पूरी कीमत चुकाना ज़रूरी नहीं होता।**

'बसंत मेरे गाँव का' लेख के प्रस्तुत प्रसंग के आधार पर एक दृश्य के लिए पटकथा तैयार करें।

उत्तरः

दृश्य - 1

स्थान : गाँव

समय : सबेरे 10 बजे

पात्र : पशुचारक, लगभग 50 साल का आदमी। धोती और बनीयान पहना है।
गाँववाला, लगाभग 45 सालवाला, कुर्ता पाजामा पहना है।

(पशुचारक कीड़ाजड़ी जैसी औषधि लेकर गाँव पहुँचता है।)

संवाद

गाँववाला	:	(खुशी से) आप लोग आ गए ?
पशुचारक	:	हाँ, हाँ । खुश हैं न सब ?
गाँववाला	:	जी। इस बार क्या-क्या लाए हैं ?
पशुचारक	:	कुछ खास नहीं। बढ़िया कीड़ाजड़ी, करण.....चुरू.....
गाँववाला	:	तो दिखाओ न ?
पशुचारक	:	ज़रूर।
गाँववाला	:	(कीड़जड़ी लेकर) इसका क्या भाव है ?
पशुचारक	:	एक तोला पचास रुपए।
गाँववाला	:	तो आधा तोला दे दो।
पशुचारक	:	ये लो ।
गाँववाला	:	ये सौ रुपए हैं, पचास रुपए पिछली बार बाकी था। वह भी ले लो।
पशुचारक	:	ठीक है, शुक्रिया।

(पशुचारक चला जाता है।)

3. **भोपाल स्टेशन पर मेरा मित्र अविनाश, मुझसे मिलने के लिए आया था। मगर बात करने की जगह उसने मेरा बिस्तर लपेटकर खिड़की से बाहर फेंक दिया और खुद मेरा सूटकेस लिए हुए नीचे उतर गया।**

'दिशाहीन दिशा' यात्रावृत्त के प्रस्तुत प्रसंग के आधार पर पटकथा का एक दृश्य तैयार करें।

उत्तरः

दृश्य - 1

स्थान : भोपाल स्टेशन

समय : रातको 9 बजे

पात्र : मोहन राकेश, लगभग 45 साल का आदमी, कुर्ता और पाजामा पहना है।

अविनाश, लगभग 45 सालवाला कुर्ता और पतलून पहना है।

(रेलगाड़ी भोपाल स्टेशन पर खड़ी है। मोहन राकेश से मिलने के लिए मित्र अविनाश डिब्बे के अंदर प्रवेश करता है।)

संवाद

मोहन राकेश	:	(खुश होकर) अरे अविनाश आप आ गए।
अविनाश	:	कितने दिन हुए मिलके !
मोहन राकेश	:	हाँ, हाँ।
अविनाश	:	बोलो यार..... क्या-क्या हैं नए समाचार ?
मोहन राकेश	:	यात्रा की कोई रूप-रेखा नहीं थी। जल्दी निकल पड़ा।
अविनाश	:	(सूटकस लेकर) तो चलो।
मोहन राकेश	:	अरे.... तू यह क्या कर रहा है ?
अविनाश	:	आज रात हम यहाँ ठहरेंगे, एक साथ।

(दोनों चले जाते हैं।)

4.

इसी बीच शादी के कार्ड छपके आए।गुठली बड़ी उत्सुक थी। जैसे-तैसे पूजा-पाठ के बाद कार्ड हाथ में आया तो गुठली का मुँह उतर गया। वह ताऊजी के पास जाकर बोली, "देखिए भइया मेरा नाम कार्ड में छपवाना भूल गया ?" ताऊजी बोले, "भूला नहीं है रे..... अपने घर की छोरियों के नाम कार्ड पर नहीं छपते।"

'गुठली तो पराई है' कहानी के प्रस्तुत अंश के आधार पर पटकथा का एक दृश्य तैयार करें।

उत्तरः

दृश्य - 1

स्थान : गुठली का घर

समय : सबेरे 7 बजे

पात्र : गुठली, चौदह साल की लड़की, सलवार कमीज़ पहनी हुई है।

ताऊजी, लगभग 60 साल का आदमी, कृर्ता और धोती पहने हैं।

(शादी के कार्ड में अपना नाम न देखकर गुठली उदासीन हो जाती है।)

संवाद

गुठली	:	ताऊजी देखिए....
ताऊजी	:	क्या है बेटी ?
गुठली	:	(दुःखी होकर) मेरा नाम कार्ड में छपवाना भूल गया ?
ताऊजी	:	भूला नहीं है रे.....
गुठली	:	फिर ?
ताऊजी	:	अपने घर की छोरियों के नाम कार्ड पर नहीं छपते।
गुठली	:	लेकिन, इसमें भइया के छोटे बच्चे का भी नाम है।
ताऊजी	:	(गुस्से में) तेरा नाम तेरे अपने कार्ड में छपेगा, यहाँ नहीं। चल, भाग यहाँ से।
		(गुठली रोकर चली जाती है।)

വയനാട് ജില്ലാ പഞ്ചായത്ത്

സമഗ്ര വിദ്യാഭ്യാസ പദ്ധതി

വാർഷിക പദ്ധതി 2022 – 23

ഉയരെ

പത്താംതരം അധിക പഠനസഹായി

എക്സലൻസ്-2022-23

ജില്ലാ വിദ്യാഭ്യാസപരിശീലനകേന്ദ്രം,ഡയറ്റ് വയനാട്

സുൽത്താൻ ബത്തേരി,വയനാട് - 673 592

ഫോൺ: 04936 - 293792, ഇ - മെയിൽ: dietwyd.dge@kerala.gov.in

www.dietwayanad.org